Ankur's UPload

# राज कामिक्स विशेषांक

मूल्य 16.00 संख्या 103

# कपालिका

## भोकाल

एक ग्रीटिंग कार्ड मुफ्त

शक्ति वर्ष 1998

Uploaded for RFN Community

Ankur's UPload

# कपालिका

□ लेखक: संजय गुप्ता.
□ सम्पादन: मनीष गुप्ता.
□ चित्रांकन: कदम स्टुडिओ.

मानवता! जिसकी भलाई और रक्षा के लिए भगवान सदा तत्पर रहते हैं। मानवता की रक्षा करना भगवान का दायित्व भी है और कर्तव्य भी। तभी जब-जब पृथ्वी पर पाप बढ़ता है, जब-जब मानवता को कुचलने का प्रयास किया जाता है तब-तब पृथ्वी पर भगवान स्वयं अवतार लेते हैं--

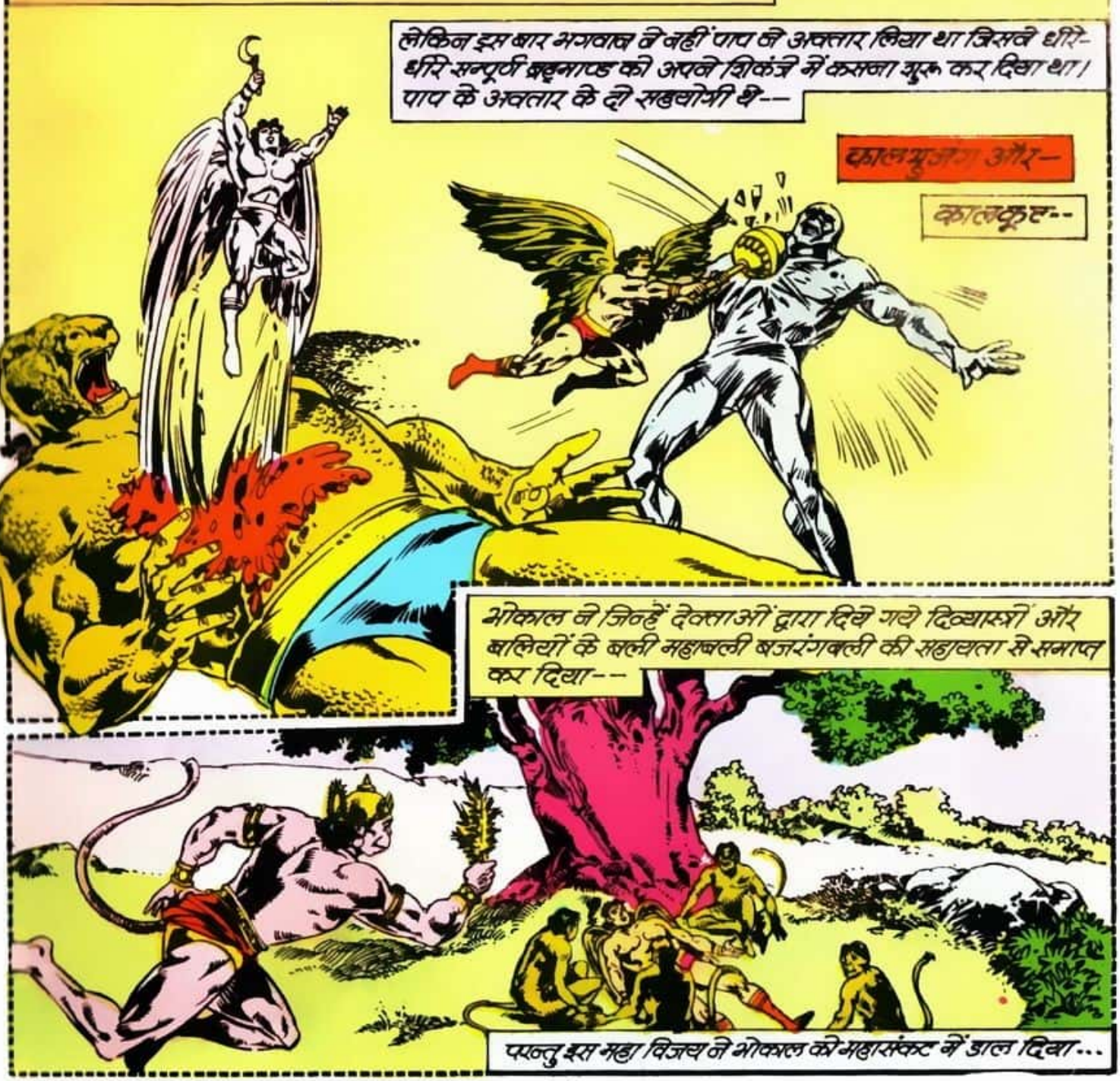


© RAJA POCKET BOOK

... और वह महासंकट था साक्षात मृत्यु को जीत लेने वाला मृत्युजीत--
हाहाहा
अपने भरपूर प्रयासों से भोकाल जिसका बाल भी बांका नहीं कर पाया--
पर जैसा कि नियम है इस नश्वर संसार में जो आया है उसे कभी या कभी समाप्त तो होना ही है--
मृत्युजीत भी समाप्त हुआ--
महाबली भोकाल के द्वारा ही समाप्त हुआ वह--
और उसे समाप्त करने में भोकाल की सहायता की ब्रह्माण्ड के सबसे शक्तिशाली पुरुष अतिकूर और...
... महान धनुर्धर धनुषा ने--
मृत्युजीत को समाप्त करके भोकाल ने एक बहुत बड़ी उपलब्धि पा ली थी। लेकिन साथ ही अपना परिवार खो दिया था। समाप्त होने से पहले मृत्युजीत भोकाल के परिवार को अपहृत करके उन्हें कलंका नगरी पहुंचा चुका था--

कलंका नगरी--
जिसके बारे में प्रसिद्ध था कि ब्रह्माण्ड की सारी सेनाएं मिलकर भी उस तक नहीं पहुंच सकती थीं। क्योंकि कलंका नगरी की रक्षा का दायित्व सम्भाले हुए थीं कलंकिनी, कपालिका और डंकिनी नामक वे तीन राक्षसी बहनें जो छल, बल और अत्यंत शक्तिशाली शैतानी शक्तियों से युक्त थीं--
जिसमें अपने आप में बेजोड़ थी डंकिनी, प्रलयंकारी डंकों की स्वामिनी। उसके अविजित डंक फौलाद तक का सीना फाड़ने की क्षमता रखते थे--
पर उन पराक्रमियों के सामने न उसके डंक काम आये और न उसका बल। अंततः मृत्यु को प्राप्त हुई डंकिनी --

और तब महाबली भोकाल ने पाप का समूल नाश करने और अपने परिवार को ढूंढ निकालने के लिए कलंका को अपना लक्ष्य बनाया--
परन्तु विषसागर पार करके कलंका तक पहुंचना इतना आसान नहीं था क्योंकि विषसागर में मौजूद थी एक ऐसी प्रलयंकारी शक्ति जिसका नाम था...
...मत्स्यकेतु--
विषसागर में खलबली मचा दी मत्स्यकेतु ने--
तीनों पराक्रमियों का पराक्रम तुच्छ सिद्ध हुआ उसके सामने--
हार के साथ-साथ मत्स्यकेतु के रूप में सभी को अपनी मौत भी दिखाई दी...
...कितभी वृद्ध के रूप में सदा भोकाल के साथ मौजूद संकटमोचन हनुमान ने भोकाल को उस संकट से उबरने का उपाय बताया--
मत्स्यकेतु पर अंकुश लगाकर इसे विषसागर पार करने का साधन बनाओ महाबली!
वृद्ध की बात भोकाल के मस्तिष्क में घर कर गई...
... उसने तुरन्त ही भगवान विघ्नेश्वर गणेश के अंकुश का स्मरण किया और उसके बल पर मत्स्यकेतु के उत्पात पर अंकुश लगाकर उसे अपना दास बना लिया--
अब मत्स्यकेतु ने ना मात्र भोकाल को अपनी विशाल विषग्रंथि भेंट की अपितु भोकाल को उसके साथियों सहित कलंका की उस धरा पर पहुंचाया...

*, यहां तक की कहानी आप पूर्व कॉमिक विशेषांक कालकूट, मृत्युजीत, डंकिनी में पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़ें!

... भगवन!
हम भलीभांति जानते हैं कपिराज कि कौन सा संकट तुम्हें हमारे समीप खींच लाया है।
भगवन तो कृपया शंका का निवारण कीजिये। समझाइये अपने भक्त को कि क्यों कलंकावासी संधि का प्रस्ताव लेकर आये हैं? क्यों उन्होंने वापस लौटा दिया है पुरूष श्रेष्ठ महाबली भोकाल के परिवार को?
यह सब कलंकिनी की माया है बजरंग! वह भगवान ब्रह्मा से वरदान प्राप्त कर और काली शक्तियों को अपना दास बनाकर तरह-तरह की माया रचने में सक्षम हो गई है...
...महाबली भोकाल और उसके साथियों के साथ-साथ तुम्हारा मतिभ्रम उसी माया का परिणाम है।...
... और हमें खेद इस बात का है कि हम इस माया के विरूध्द चाहते हुए भी कुछ नहीं कर सकते क्योंकि हम व समस्त देवता-गण वचन-बद्ध हैं।

... परन्तु चिन्तित ने होओ वीर हनुमान पृथ्वी पर जन्म लेने वाली हर शक्ति का नाश निश्चित है। समय की प्रतीक्षा करो...
...अब तुम जाओ वानरराज! महाबली भोकाल को तुम्हारी आवश्यकता पड़ सकती है।
जो आज्ञा भगवन!
तुरन्त ही अंतर्धान हो गये बजरंगबली--
श्रीराम ने अचानक मुझे वापस लौट जाने का आदेश दिया। उनके इस आदेश के पीछे अवश्य ही कोई मतलब छिपा हुआ है।
शायद भोकाल पर कोई संकट आने वाला है? ...परन्तु कैसा संकट?
भोकाल पर कौन सा संकट आनेवाला था इसके बारे में ना तो हनुमान कुछ जानते थे...
...और ना ही खुद भोकाल कुछ जानता था--
जब से तुम मुझे मिले हो तुममें से किसी की भी जुबान से कोई बोल नहीं फूटा। कुछ बोलो सलोनी!...

कुछ तो कहो रूपसी!
बोलो क्या हुआ है तुम्हें!
ना सलोनी बोली और ना रूपसी--
लेकिन फिर भी भोकाल को उसके प्रश्न का उत्तर मिला--
और वह उत्तर उसे मिला एकाएक वहां गूंज उठी उस आवाज से--
मनुष्यों की बात का उत्तर कोई मनुष्य ही दे सकता है भोकाल! और तू इस लायक नहीं कि तू मनुष्यों के साथ रहे...
...तू तो इस काबिल है कि तू पशुओं से बातें करें और...
...पशुओं को ही गले लगाये!
रूपसी बकरी और सलोनी गधी में बदलकर भाग चली...
...व भोकाल की गोद में थमें बच्चे उल्लुओं में बदलकर उड़ चले।

अभी सभी आश्चर्यचकित से उस दृश्य को देख ही रहे थे कि सामने उठ खड़ा हुआ एक बवण्डर--
ओफ्फ! यह क्या है?
यह बवण्डर तो विद्युत की सी गति से इधर ही बढ़ता आ रहा है!
मैं अभी इसे रोकता हूं।
धनुषा ने झपटकर अपना धनुष सम्भाला, लेकिन वह उसकी प्रत्यंचा सम्भाल पाता...
... उससे पहले ही उस अद्भुत बवण्डर ने सभी को अपनी चपेट में ले लिया--
ओह!
ओफ्फ!
ओफ्फ! इस बवण्डर ने तो अंधा कर दिया है हमें।
हाथ को हाथ सुझाई नहीं दे रहा।
किसी को कुछ नहीं दिखाई दे रहा था--
भोकाल को अपनी चपेट में लेकर बवण्डर विद्युत की सी गति से घूमने लगा--
ओफ्फ!
बवण्डर भोकाल को अपने साथ लेकर तीव्र गति से एक तरफ उड़ चला--
मूर्ख हो तुम सब जो तुमने यह समझ लिया कि हमने अपनी पराजय स्वीकार कर ली है। तुमसे संधि करना और भोकाल के परिवार को उसको सौंपना तो तुम सबको असावधान करने का भ्रम था।

Ankur's UPload

...आंखों और सीने में क्रोध का वह ज्वालामुखी लिये...
...जो किसी भी समय कपालिका पर फट सकता था...
...कि तभी गूंज उठी वह आवाज-
ठहरो बजरंग बली शान्त हो जाओ!
परमपिता ब्रह्मा! नहीं भगवन, नहीं। आज बजरंग नहीं रुक सकता। आज मेरे हाथों उस पापिन का नाश होकर रहेगा...
...अगर मैंने ऐसा न किया तो ना मानवता का रक्षक भोकाल बचेगा और ना मानवता।...
...इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूं परमपिता मुझे मत रोकिये!
शान्त। वीर हनुमान शान्त। अपने क्रोधित मस्तिष्क को अपने अधिकार में करो और राक्षसों को दिये गये वरदान को स्मरण करो...
हमारे दिये वरदान के अनुसार कोई भी देवता राक्षसों के किसी भी कार्य में हस्तक्षेप नहीं कर सकता इसलिए भोकाल जैसे श्रेष्ठ पुरुष को हमने दिव्यास्त्र सौंपे हैं।...
... तुम अगर कपालिका पर प्रहार करोगे तो यह हमारे वरदान और मर्यादा पुरुषोत्तम राम के वचनों का अपमान होगा।

झूठी पड़ जायेगी उनकी रघुकुल रीत...
...इसलिए हे अंजनिपुत्र ! क्रोध के साथ-साथ कपालिका का नाश करने का विचार भी त्याग दो।
वचनबद्धता ने बेबस कर दिया उस बलियों के बली को--
उछाल फेंका उन्होंने अपने हाथ में थमे विशाल पर्वत को--
लेकिन अभी उन्होंने कपालिका का पीछा नहीं छोड़ा था--
राक्षस शक्तियों को हम कुछ नहीं कहेंगे परन्तु अपने भक्त को हम इस तरह अकेला भी नहीं छोड़ेंगे...
...उसके पीछे-पीछे हम भी पहुंचेंगे...
...कलंका में--
ओह ! यह क्या हुआ ? कलंकानगरी में प्रवेश करते ही हमारी शक्ति क्षीण हो रही है।...
...हम नीचे गिर रहे हैं...
ओह ! कलंका के बारे में जैसा सुना था वैसा ही है। कलंका में प्रवेश करते ही हर पुण्य शक्ति क्षीण हो जाती है।...
...हमारे साथ भी ऐसा ही हो रहा है, लेकिन...नीचे पहुंचने से पहले हमें अपना रूप बदलना होगा।
भोकाल का एक शुभचिन्तक उसी के साथ मुसीबत में फंसने जा रहा था।

इधर बवण्डर की विभीषिका के पश्चात अतिक्रूर व धनुषा इत्यादि सहायता कार्यों में व्यस्त थे-
वह भीषण बवण्डर एकाएक आया और एकाएक ही वापस लौट गया!
भोकाल से इस विषय में विचार विमर्श करना होगा!
लेकिन भोकाल व वृद्ध कहां गए? यहां तो वे कहीं नजर नहीं आ रहे!
भोकाल को वहां ना पाकर ठनक गया अतिक्रूर का माथा-
दूसरे ही क्षण सारा घटनाक्रम उसकी समझ में आता चला गया-
मैं समझ गया वह भीषण बवण्डर किसी की माया का अंग था। जिसका एकमात्र उद्देश्य था हम सबको अपनी चपेट में लेकर भोकाल का अपहरण करना!
सचमुच ऐसा ही हुआ है मित्र! राक्षसों ने छल करके हमारे मित्र का अपहरण कर लिया है।
उत्तर में मेघ की तरह गरजा वह क्रूरों का क्रूर --
ऐसा करके राक्षसों ने अपने काल को और पास बुला लिया है धनुषा! इस छल के लिए कलंका का एक-एक राक्षस लहू के आंसू रोयेगा।...

...कलंका के जर्रे-जर्रे को अपनी क्रूरता का शिकार बनाकर अपने मित्र भोकाल को खोज निकालेगा अतिक्रूर।
मुझे भी भोकाल की खोज मे जाना है लेकिन बाद में। पहले मुझे बवण्डर के कारण अस्तव्यस्त हो गये अपने भील साथियों को सम्भालना है।
क्रोध से भरे अतिक्रूर के कदम अपने मित्र की खोज में आगे बढ़ गये...
...जिन्हें रोकने का साहस ना तो विशाल पर्वत कर सके --
भड़ाक
और ना गहरी खाइयों से भरे दुर्गम रास्ते --
अपने असाधारण बल...
... और अद्भुत अस्त्र दतांक की शक्ति का अतुलनीय परिचय देता आगे बढ़ रहा था अतिक्रूर --
अपने उस प्राणप्रिय मित्र की खोज में...

...जो इस समय कलंका में मौजूद था-
बवण्डर अब ले रहा था एक ऐसी महाशक्ति का रूप जिसका नाम था...
...कपालिका-
हा हा हा
इधर कपालिका वापस अपने रूप में लौटी--
इधर चीते की तरह सम्भलकर अपने पैरों पर खड़ा हुआ वह महाबली--
मुझे फंसाकर यहां लाने से पहले अगर तूने एक बार भी विचार कर लिया होता दुष्टा कि तू अपनी मृत्यु अपने साथ ले जा रही है तो तू मुझे यहां कदापि नहीं लाती।

कहानी 19 वें पृष्ठ से जारी



Uploaded for RFN Community

...जन्म लेती है।
...हा हा हा
मच्छरों को देवता दिव्यास्त्र नहीं सौंपा करते दुष्टा!
यह देख काली मां की पाप विनाशिनी खड्ग एक मच्छर के हाथ में नहीं एक महाबली के हाथ में प्रकट होगी।
जय काली मां!
हा हा हा
काली मां का स्मरण किया भोकाल ने--
इसी के साथ आश्चर्य उसके शरीर के रोंये-रोंये में प्रवेश करता चला गया--
काली मां की खड्ग प्रकट नहीं हुई...
..ऐ...ऐसा कैसे हो गया?
हा हा हा! भोकाल अब भिनभिनाना छोड़कर इन काली शक्तियों का कमाल देख!
छोड़ यह बचपना और शान्त खड़ा होकर अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर!
ओह!
भोकाल को अपनी शक्ति के बंधनों में कैद करके...

...पास ही स्थित उस विशाल प्रतिमा की तरफ पलटी कपालिका--
मनुष्य श्रेष्ठ पाप का सबसे बड़ा शत्रु दिव्यास्त्र धारक भोकाल कपालिका का बंदी है। महान कलंकिनी प्रकट होकर आदेश दो इसका क्या किया जाये...
...प्रकट हो महान कलंकिनी! प्रकट हो।
कपालिका की उंगली से निकली रक्त की धार उस काली प्रतिमा का रंग लाल करती चली गई--
एक क्षण बाद ही उस प्रतिमा में हुए जोरदार धमाके ने सारे वातावरण को हिला डाला--
धमाके से प्रतिमा के परखच्चे उड़ चुके थे--
धड़ाम
और अब प्रतिमा के स्थान पर साक्षात नजर आ रही थी वह पाप की देवी--
महान कलंकिनी की जय!

अपनी प्यारी बहन डंकिनी की मृत्यु के पश्चात आज पहली बार मैं अत्याधिक प्रसन्न हूं। और ऐसा इसलिए कि आज तुम्हारे प्रयासों से कलंका में डंकिनी का हत्यारा उपस्थित है।...
...और साथ ही उपस्थित है त्रिलोक की एक ऐसी शक्ति...
...जिसे बंदी बनाने का साहस तो साक्षात काल में नहीं है।
किस शक्ति की बात कर रही हो महान कलंकिनी?
उत्तर में लहराया कलंकिनी का हाथ...
...और इसी के साथ हवा में लहराते वहां पहुंचे बंदी बने वृध्द--
यह है काल को भी मात कर देने वाली वह शक्ति जो संयोग से हमारे जाल में आ फंसी है।
सचमुच। लेकिन यह कब यहां आ पहुंचा? इसकी तो मुझे खबर ही नहीं।
वृध्दवर!
ये यहां कैसे आ पहुंचे?
भोकाल के साथ कपालिका भी मुंह बाए वृध्द को देख रही थी...

...जबकि प्रफुल्लित कलंकिनी बोले ही जा रही थी--
रुधिर यज्ञ के लिए ग्यारह लाख कुम्भों में अभी जो एक लाख कुम्भ रक्त से खाली हैं अब इन्हें, एक लाख मनुष्यों के रक्त से भरने की कोई आवश्यकता नहीं है कपालिका...
... इन दोनों पुण्यात्माओं का प्रताप एक लाख मनुष्यों से कहीं अधिक है। प्रसन्नता से नाचो कपालिका और कल आनेवाली अमा-वस्या को ही रुधिर यज्ञ पूरा करने की तैयारी करो...
... और करो दस लाख कुम्भों में भरे रक्त के साथ-साथ इन दोनों के...
...रक्त की रुधिर यज्ञ में पूर्णाहुति ..
... देने की तैयारी। हा हा हा।
ठहाका लगाकर पुनः प्रतिमा में बदल गई कलंकिनी नहीं जानती थी कि कल जिस रुधिर यज्ञ को सफल करने का वह सपना देख रही थी...

उसे आज ही ध्वस्त करने की ठानकर आगे बढ़ रहा था वह बलशाली--
वह सर्वाधिक क्रूर--
चट्टानों का चूरा करता--
और खाइयों को पाटता हुआ--
जिसकी एक ही मंजिल थी कलंका...

...और उसके प्रयास बता रहे थे कि वह कलंका तक जल्द से जल्द पहुंच जाना चाहता था--
भड़ाक

लेकिन कलंका तक पहुंचना इतना आसान कहां था--
बचाओ
पास ही कहीं से गूंजी थी वह पीड़ा भरी चीख...

...जिसने एक पल के लिए दैत्याक के बरसते कहर को रोक लिया--
कोई संकट में है। मुझे उसे देखना चाहिए!
तुरन्त ही उस शक्तिमान के कदम चीख का पीछा करने लगे

... और कुछ ही क्षणों बाद जा रुके उस विशाल गुफा के सामने--
क्याओ
इसी गुफा से आ रही है किसी के चीखने की आवाज इसलिए... मुझे बिना कोई क्षण गंवाए...
...इस गुफा में प्रवेश कर जाना चाहिए।
तीव्र गति से दौड़ते हुए गुफा में प्रवेश करके अतिक्रूर ने सिद्ध कर दिया कि जिनकी भुजाओं में असीम बल होता है, जिन्हें अपनी शक्ति पर पूर्ण विश्वास होता है वे सोचने-समझने में समय खराब नहीं करते...
...लेकिन तभी गुफा के मुंह ने बंद होकर यह बता दिया कि परिस्थिति चाहे जैसी भी हो सोचना-समझना अत्यंत आवश्यक है...
भड़ाक

Ankur's UPload

...और वा ही संकट को रौंदकर उसके बाहर निकलने में--
अतिक्रूर के साथ ही अन्य युवक भी अजगोरा के खुले जबड़े से अपनी जान बचाकर भागे -
इसी के साथ मानो वहां भूचाल आ गया--
कलंका की तरफ बढ़ने वाला हर प्राणी अजगोरा के उदर में पहुंचता है तू भी पहुंचेगा। ये अलग बात है कि अन्य प्राणियों की तरह तू अजगोरा के उदर में...
...जीवित नहीं मृत होकर जायेगा!
अपने मित्र को खोजने का वचन लेकर निकला हूं मैं अजगोरा!
मेरी राह में आने वालों के दांत मैं दतांक से तोड़ दूंगा।
भड़ाक

तेरे इस भीषण अस्त्र का वार मेरी मोटी खाल पर उस तिनके की तरह हो रहा है... जिसे मैं यूं हवा में उड़ा सकता हूं।
फड़
ओफ्फ!
पहाड़ तक नहीं टिक पाते मेरी फूंक के सामने।
ओह! उसकी प्रलयंकारी फूंक से भारी चट्टानें और विशाल पेड़ विद्युत गति से उड़कर मेरी तरफ ही आ रहे हैं...
इनमें से एक का भी मेरे शरीर से टकराने का अर्थ है मेरे शरीर का खील-खील होकर बिखर जाना!
भड़ाक
धड़ाक
अतिक्रूर ने शायद ही पहले कभी इतनी तेजी से दंताक घुमाया हो--

शायद ही पहले कभी इतनी फुर्ती दिखाई हो...
...और शायद ही कभी दंताक का इतनी जोर से किसी पर प्रहार किया हो--
भड़ाक
शरीर की तरह अजगोरा की आंख मजबूत ना निकली--
आंख के फूटने ने अजगोरा के क्रोध की आग को और भी भड़का डाला--
मेरी यह फुफकार तुझे गहन अंतरिक्ष में उड़ाकर ले जायेगी दुष्ट!
फाऽऽऽ
ओह!
एक बार फिर उखड़ गये थे अतिक्रूर के पांव...
...और इस बार पांव उखड़ना अतिक्रूर के लिए अत्यंत हानिकारक सिद्ध होने वाला था, क्योंकि उस फुफकार की तेजी ने उसे आकाशगंगा में उड़ाकर ले जाया था--
जहां पहुंचकर अतिक्रूर ने कभी वापस नहीं लौटना था-
और अब ऐसा होने ही जा रहा था!...

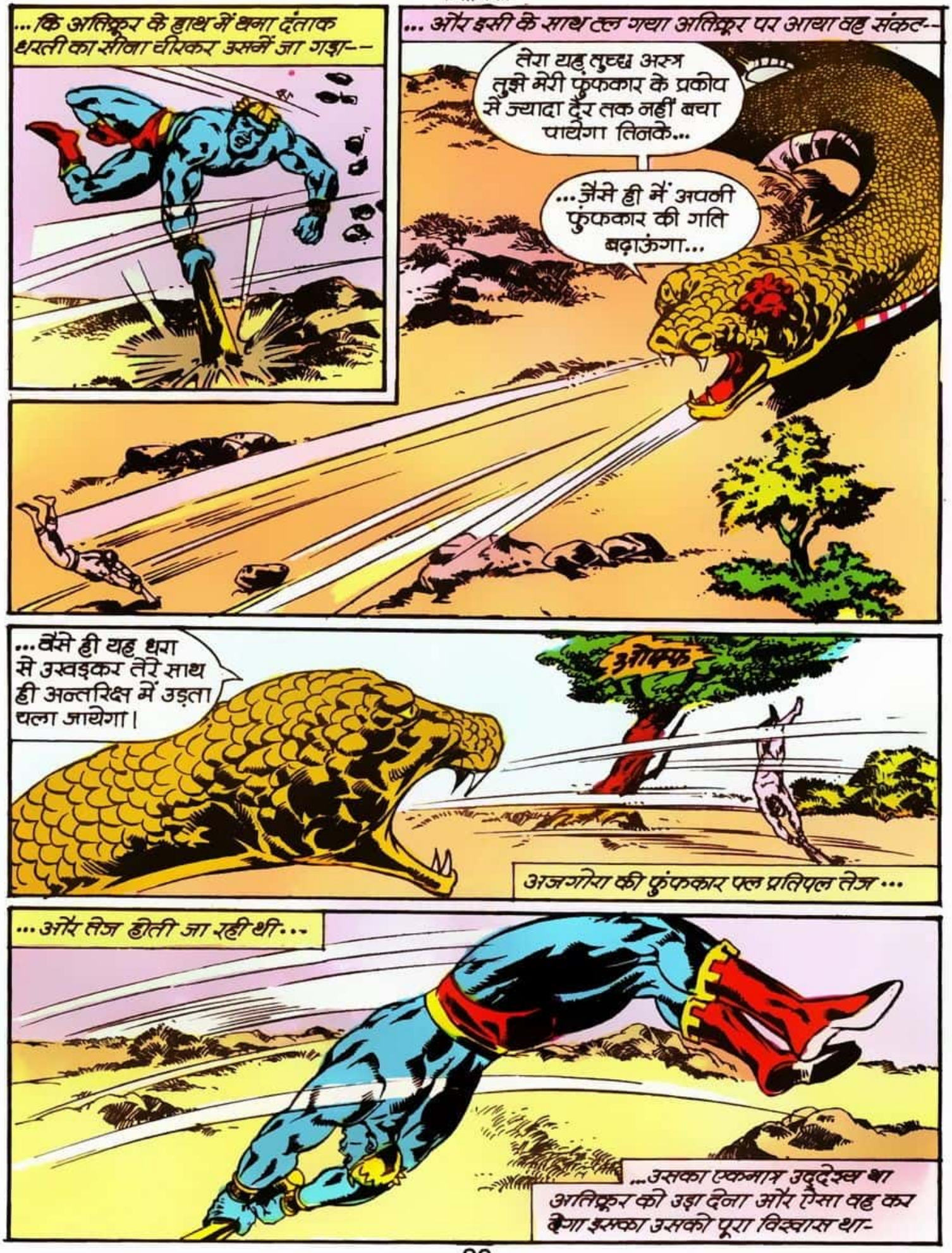
...कि अतिक्रूर के हाथ में थमा दंताक धरती का सीना चीरकर उसमें जा गड़ा--
... और इसी के साथ टल गया अतिक्रूर पर आया वह संकट--
तेरा यह तुच्छ अस्त्र तुझे मेरी फुंफकार के प्रकोप से ज्यादा दूर तक नहीं बचा पायेगा तिनके...
...जैसे ही मैं अपनी फुंफकार की गति बढ़ाऊंगा...
...वैसे ही यह धरा से उखड़कर तेरे साथ ही अन्तरिक्ष में उड़ता चला जायेगा।
ओफ्फ
अजगोरा की फुंफकार पल प्रतिपल तेज ...
... और तेज होती जा रही थी...
...उसका एकमात्र उद्देश्य था अतिक्रूर को उड़ा देना और ऐसा वह कर देगा इसका उसको पूरा विश्वास था-

 Ankur's UPload

... आज इसी पुंध की वजह से तू स्वयं...
सांय
सांय
सांय

...अंतरिक्ष की सैर कर।
अपने प्रतिद्वंद्वी को उसके अंजाम तक पहुंचाने के बाद--

अपने शरीर पर उभर आये पसीने को भी नहीं पोंछा उस पराक्रमी ने--
पसीना पोंछने का समय अभी कहां था उसके पास। वह तो अतिशीघ्र अपने उस मित्र के पास पहुंच जाना चाहता था...

... जो असहाय वृद्ध के साथ कपालिका की कैद में था--
ये कपालिका क्या कर रही है वृद्धवर ?

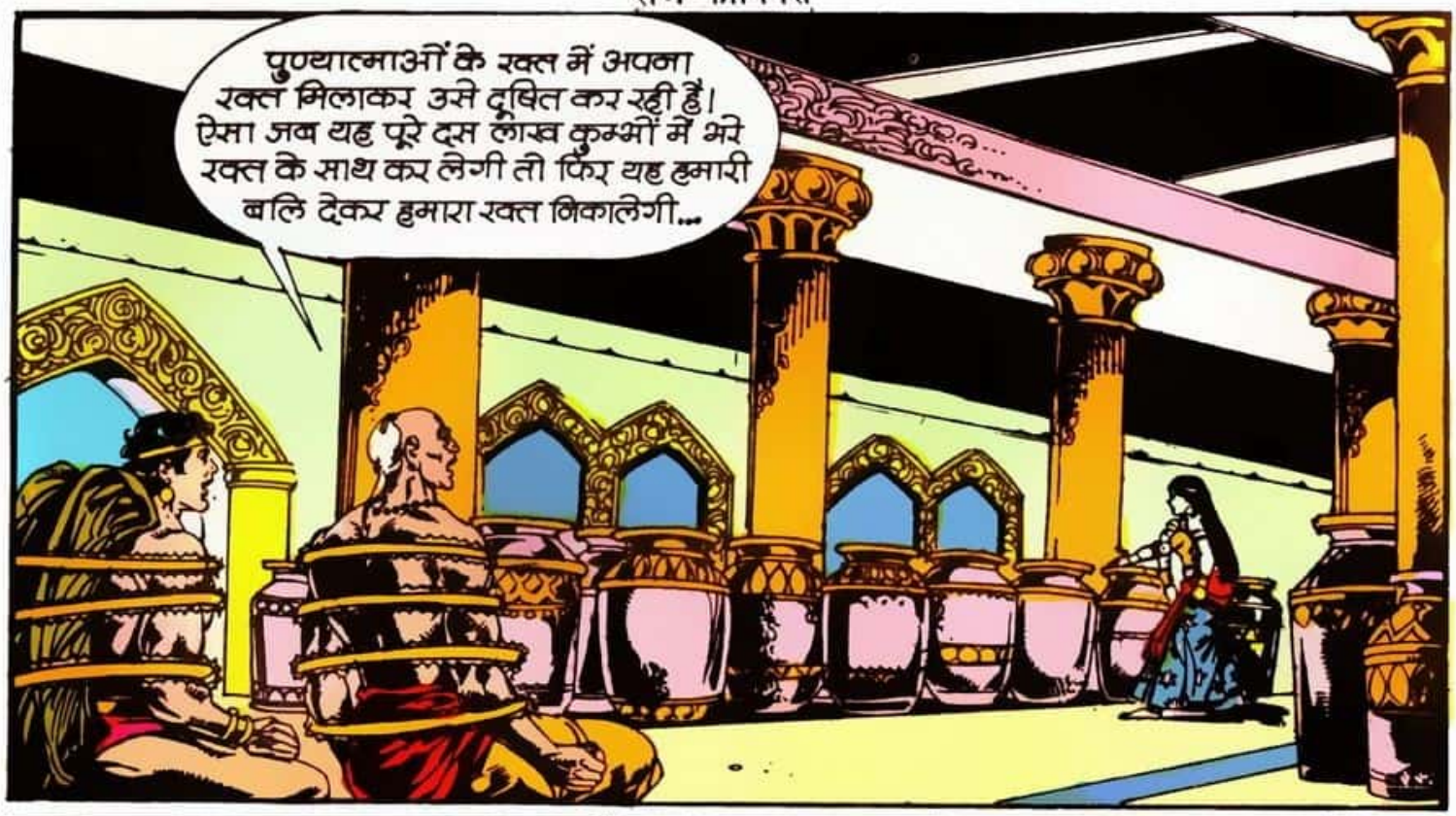
पुण्यात्माओं के रक्त में अपना रक्त मिलाकर उसे दूषित कर रही है। ऐसा जब यह पूरे दस लाख कुम्भों में भरे रक्त के साथ कर लेगी तो फिर यह हमारी बलि देकर हमारा रक्त निकालेगी...

...और फिर पूरा करेगी अपना रुधिर यज्ञ।
ओफ्फ! क्या हम इस दुष्टा को रोकने के लिए और स्वयं को बचाने के लिए कुछ नहीं कर सकते ?

नहीं! महापराक्रमी शक्तिहीन निरीह प्राणी ऐसा दुष्कर कार्य नहीं कर सकते।
तो क्या हम समाप्त हो जायेंगे वृद्धवर ? ...क्या पाप जीत जायेगा ?

इस विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता महाबली!
भोकाल ने पहली बार वृद्ध के चेहरे पर चिन्ता की लकीरें देखीं--

चिन्ता की वैसी ही कुछ लकीरें इस समय भोकाल के भील साथियों के चेहरे पर भी नजर आ रही थीं--
महाबली राक्षसों के चंगुल में फंस गये हैं। ना जाने वे उनके साथ कैसा बर्ताव कर रहे होंगे।
मुझे भी महाबली की चिन्ता है भीलराज, परन्तु यहां मौजूद साथियों के कारण मैं उनकी खोज में ना जाने के लिए विवश हूं।
धनुषा की बात पर--

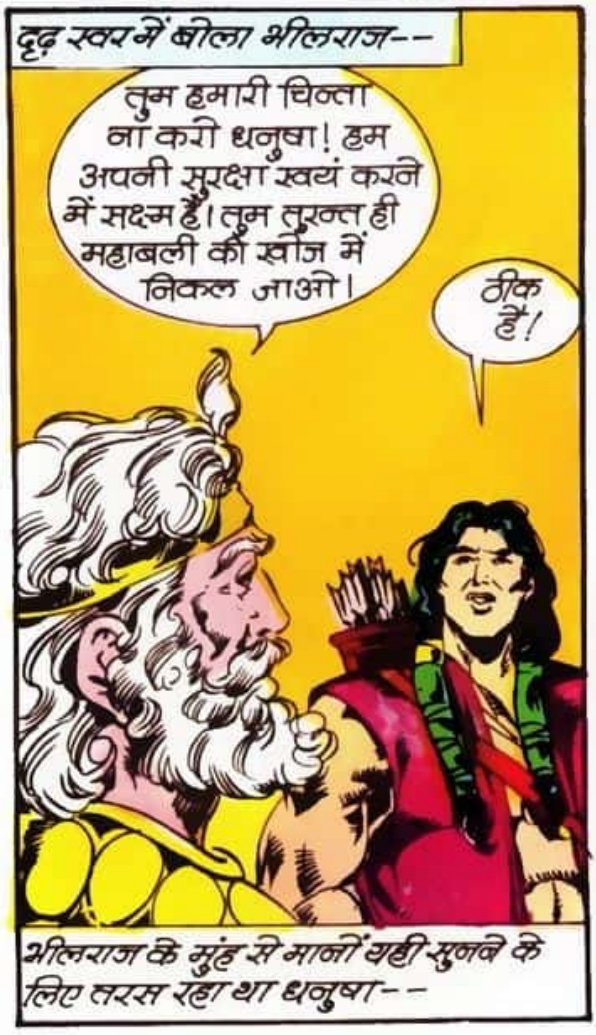
दृढ़ स्वर में बोला भीलराज--
तुम हमारी चिन्ता ना करो धनुषा! हम अपनी सुरक्षा स्वयं करने में सक्षम हैं। तुम तुरन्त ही महाबली की खोज में निकल जाओ।
ठीक है!
भीलराज के मुंह से मानों यही सुनने के लिए तरस रहा था धनुषा--

दूसरे ही क्षण उसने अपना धनुष संभाला और उसने छोड़ दिये सैकड़ों बाण--

एक क्षण बाद ही सामने बाणों से निर्मित एक यान खड़ा नजर आया--
इस यान में बैठकर मैं कलंका तक पहुंचूंगा...
...और इस यान को वहां तक पहुंचायेगा यह वायव्यास्त्र।
धनुषा के धनुष से छुटकर पवन गति से आकाश में लहराया वह बाण-
और बाण के साथ हवा में लहरा उठा वह यान--
भीकाल का एक और शुभ-चिन्तक कलंका के लिए रवाना हो गया
जैसे-जैसे उसका यान आगे बढ़ रहा था वैसे-वैसे उसके मुंह से प्रशंसा के पुष्प झड़ रहे थे--
वाह बलशिखर। वाह उच्चकोटि बलि। इतना बल इतना पराक्रम यदि कोई दिखा सकता है तो वह केवल तुम ही हो सकते हो अतिक्रूर!
ऊंचे-ऊंचे पर्वतों के सीने काटकर क्या सपाट मार्ग बनाया है!
अब भील सेना आसानी से पापी के प्रहरी बने इन पर्वतों को अंगूठा दिखाती कलंका को कूच कर जायेगी।

Buy RC , Save RC

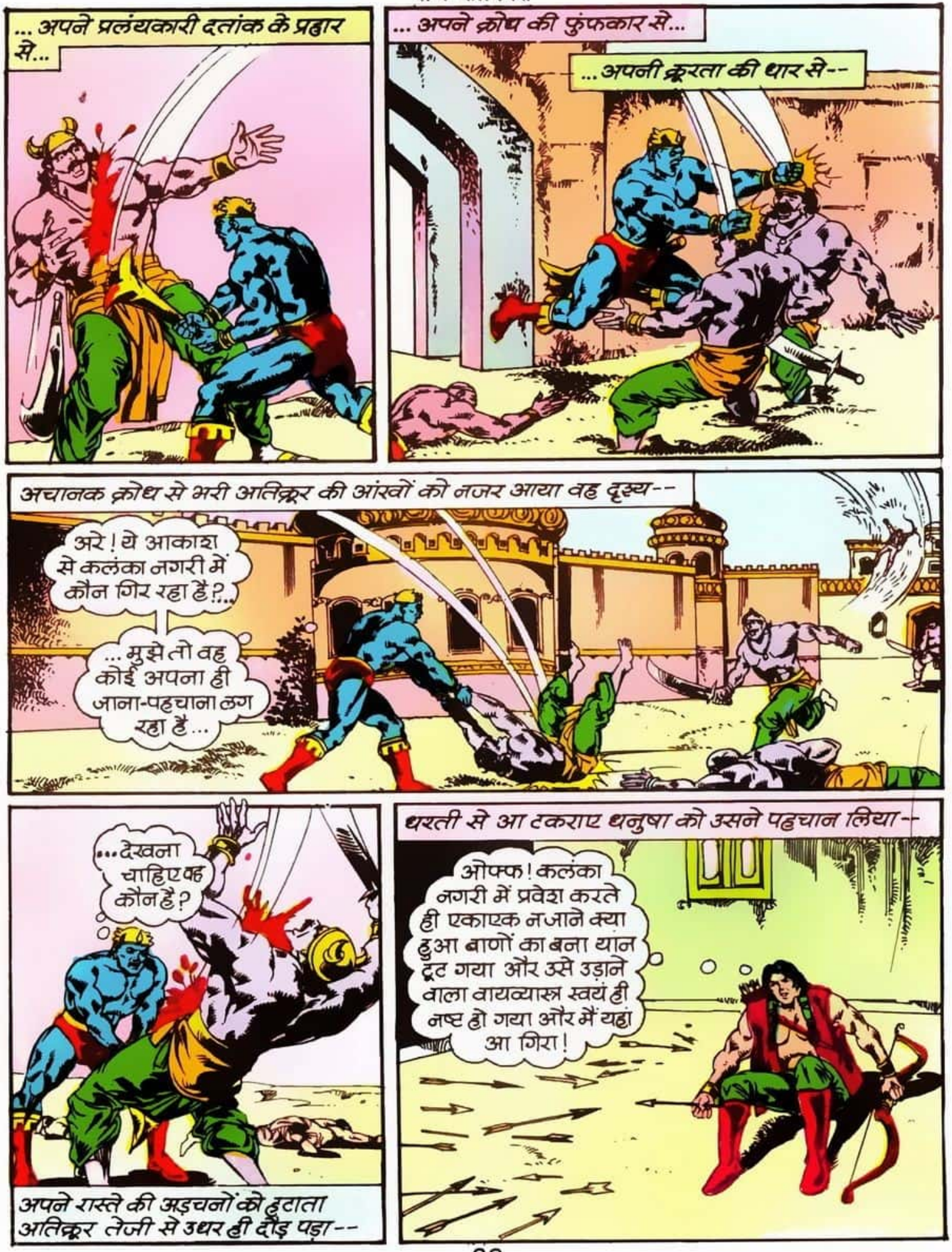
... अपने प्रलंयकारी दतांक के प्रहार से...
... अपने क्रोध की फुंफकार से...
... अपनी क्रूरता की धार से--
अचानक क्रोध से भरी अतिक्रूर की आंखों को नजर आया वह दृश्य--
अरे ! ये आकाश से कलंका नगरी में कौन गिर रहा है?...
... मुझे तो वह कोई अपना ही जाना-पहचाना लग रहा है...
...देखना चाहिए वह कौन है?
अपने रास्ते की अड़चनों को हटाता अतिक्रूर तेजी से उधर ही दौड़ पड़ा--
धरती से आ टकराए धनुषा को उसने पहचान लिया--
ओफ्फ ! कलंका नगरी में प्रवेश करते ही एकाएक नजाने क्या हुआ बाणों का बना यान टूट गया और उसे उड़ाने वाला वायव्यास्त्र स्वयं ही नष्ट हो गया और मैं यहां आ गिरा !

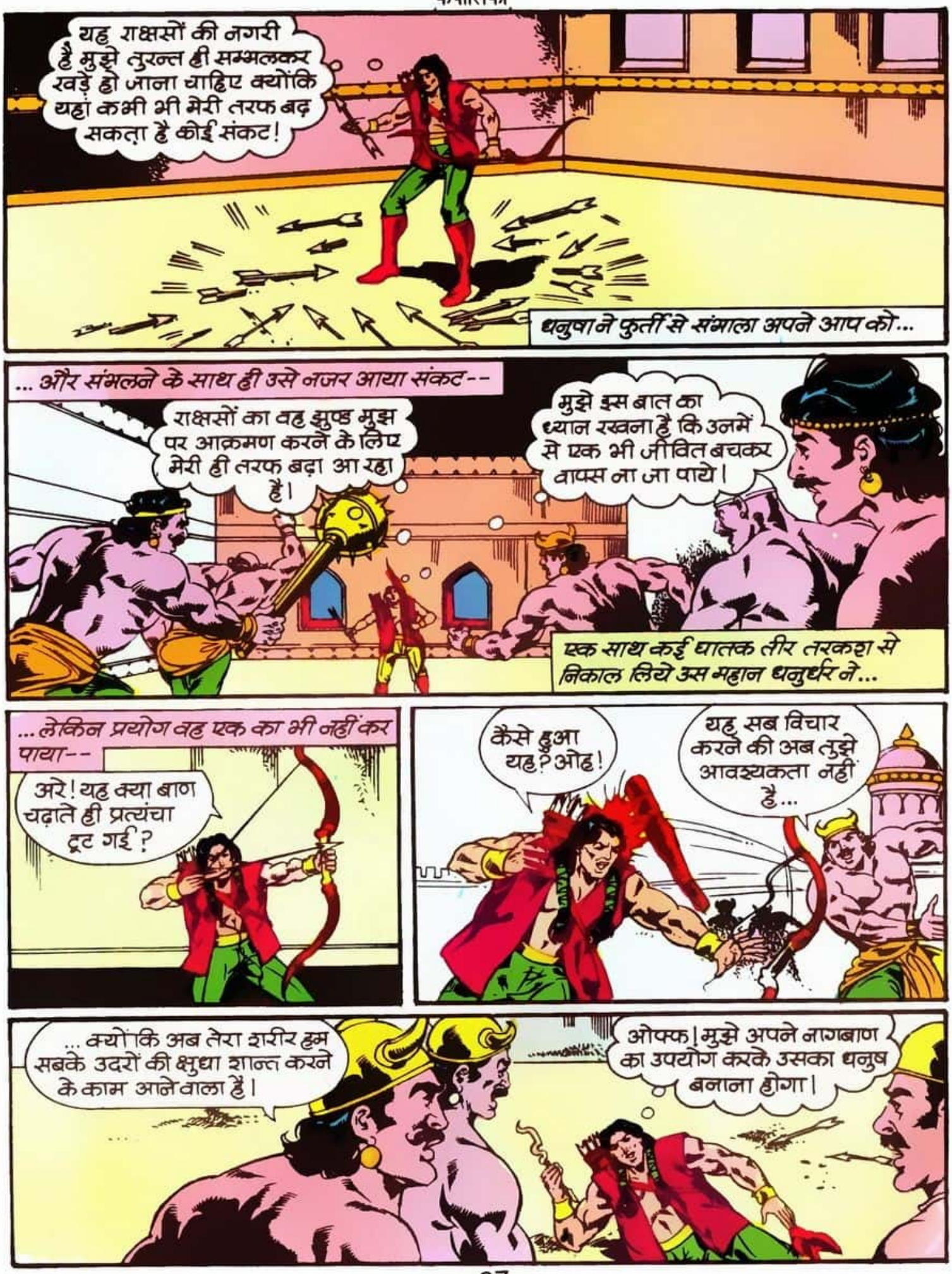
यह राक्षसों की नगरी है मुझे तुरन्त ही सम्भलकर खड़े हो जाना चाहिए क्योंकि यहां कभी भी मेरी तरफ बढ़ सकता है कोई संकट!
धनुषा ने फुर्ती से संभाला अपने आप को...
... और संभलने के साथ ही उसे नजर आया संकट--
राक्षसों का वह झुण्ड मुझ पर आक्रमण करने के लिए मेरी ही तरफ बढ़ा आ रहा है।
मुझे इस बात का ध्यान रखना है कि उनमें से एक भी जीवित बचकर वापस ना जा पाये।
एक साथ कई घातक तीर तरकश से निकाल लिये उस महान धनुर्धर ने...
... लेकिन प्रयोग वह एक का भी नहीं कर पाया--
अरे! यह क्या बाण चढ़ाते ही प्रत्यंचा टूट गई?
कैसे हुआ यह? ओह!
यह सब विचार करने की अब तुझे आवश्यकता नहीं है...
... क्योंकि अब तेरा शरीर हम सबके उदरों की क्षुधा शान्त करने के काम आने वाला है।
ओफ्फ! मुझे अपने नागबाण का उपयोग करके उसका धनुष बनाना होगा।

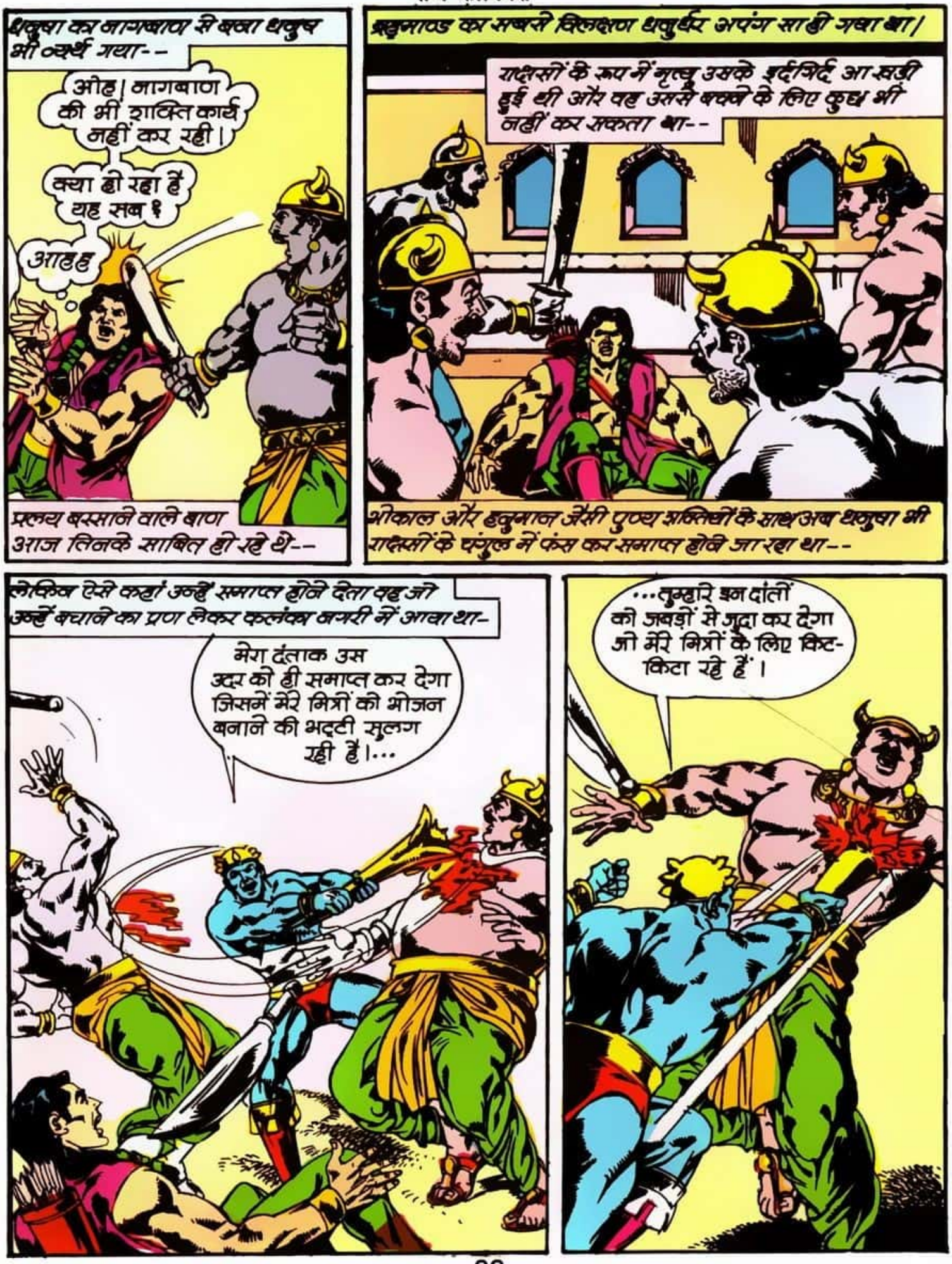
धनुषा का नागबाण से बचा धनुष भी व्यर्थ गया--
ओह! नागबाण की भी शक्ति कार्य नहीं कर रही।
क्या हो रहा है यह सब?
आहह
प्रलय बरसाने वाले बाण आज तिनके साबित हो रहे थे--
ब्रह्मांड का सबसे विलक्षण धनुर्धर अपंग सा हो गया था।
राक्षसों के रूप में मृत्यु उसके इर्दगिर्द आ खड़ी हुई थी और वह उससे बचने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता था--
भोकाल और हनुमान जैसी पुण्य शक्तियों के साथ अब धनुषा भी राक्षसों के चंगुल में फंस कर समाप्त होने जा रहा था--
लेकिन ऐसे कहां उन्हें समाप्त होने देता वह जो उन्हें बचाने का प्रण लेकर कलंक्य नगरी में आया था-
मेरा दंताक उस उदर को ही समाप्त कर देगा जिसमें मेरे मित्रों को भोजन बनाने की भट्टी सुलग रही है।...
...तुम्हारे इन दांतों को जबड़ों से जुदा कर देगा जो मेरे मित्रों के लिए किट-किटा रहे हैं।

तुम भी इसका प्रहार परखो।
आह्ह्
तुम्हारी क्षुधा ही क्या तुम्हें ही शान्त किये देता हूं मैं।
भड़ाक
आह्ह्ह्
सभी राक्षसों को अपनी क्रूरता का शिकार बनाकर...
.अतिक्रूर ने धनुषा को संभाला-
अपने आपको संभालो मित्र! तुम्हारी इस क्षीण दशा की जिम्मेदार यह कलंका नगरी है।
ओह!... ऐसा है तो तुम यहां कैसे सकुशल हो और कैसे अपनी शक्ति का प्रयोग कर पा रहे हो?
मैं राक्षस जाति का हूं इसलिए इस नगरी का प्रभाव मेरी शक्तियों पर नहीं पड़ रहा।
इसका तात्पर्य हमारा मित्र भोक्रल भी क्षीणावस्था में इसी नगरी में कहीं होगा!

हां, परन्तु तुम चिन्ता मत करो धनुषा! मैं उसे कुछ नहीं होने दूंगा। पूरी कलंका नगरी को तहस-नहस करके खोज निकालूंगा मैं उसे।
धनुषा को साथ लेकर अतिक्रूर ने कदम आगे बढ़ा दिये--
उनकी तलाश में जो अब उससे ज्यादा दूर नहीं थे--
जैसे-जैसे यह अपना रक्त कुम्भों के रक्त में मिलाती जा रही है वैसे-वैसे उसके शरीर में शिथिलता आती जा रही है।
हां। शरीर से रक्त निकलने के कारण दुर्बल तो होती जा रही है ये परन्तु जैसे ही यह रुधिर यज्ञ पूरा कर लेगी यह ऐसी अपार शक्ति की स्वामिनी बन जायेगी...
...ब्रह्माण्ड में जिसे कोई भी पराजित नहीं कर सकता।
ओह! काश! हम दुष्ट कपालिका को वह शक्ति प्राप्त करने से रोक पाते।
हम कपालिका को नहीं रोक पा रहे हैं तो क्या हुआ कपालिका तो फिर भी रुकेगी क्योंकि आ पहुंचा है उसे रोकने वाला...
...वो देखो!
भोकाल ने तुरन्त ही वृद्ध के हाथ की दिशा में देखा...

...तो उसे नजर आया--
अतिक्रूर!
भीकराल और वृहद के साथ-साथ...
...राक्षसों की निगाहें भी अतिक्रूर पर पड़ गईं--
वह स्वामिनी कपालिका के यज्ञ में विघ्न डाल सकता है। उसे रोको।
लेकिन वे जिसे रोकना चाहते थे वह एक ऐसा तूफान बनकर आया था...
...जो अपनी शक्ति से शत्रु की बड़ी से बड़ी दीवार से टकराने...

Ankur's UPload

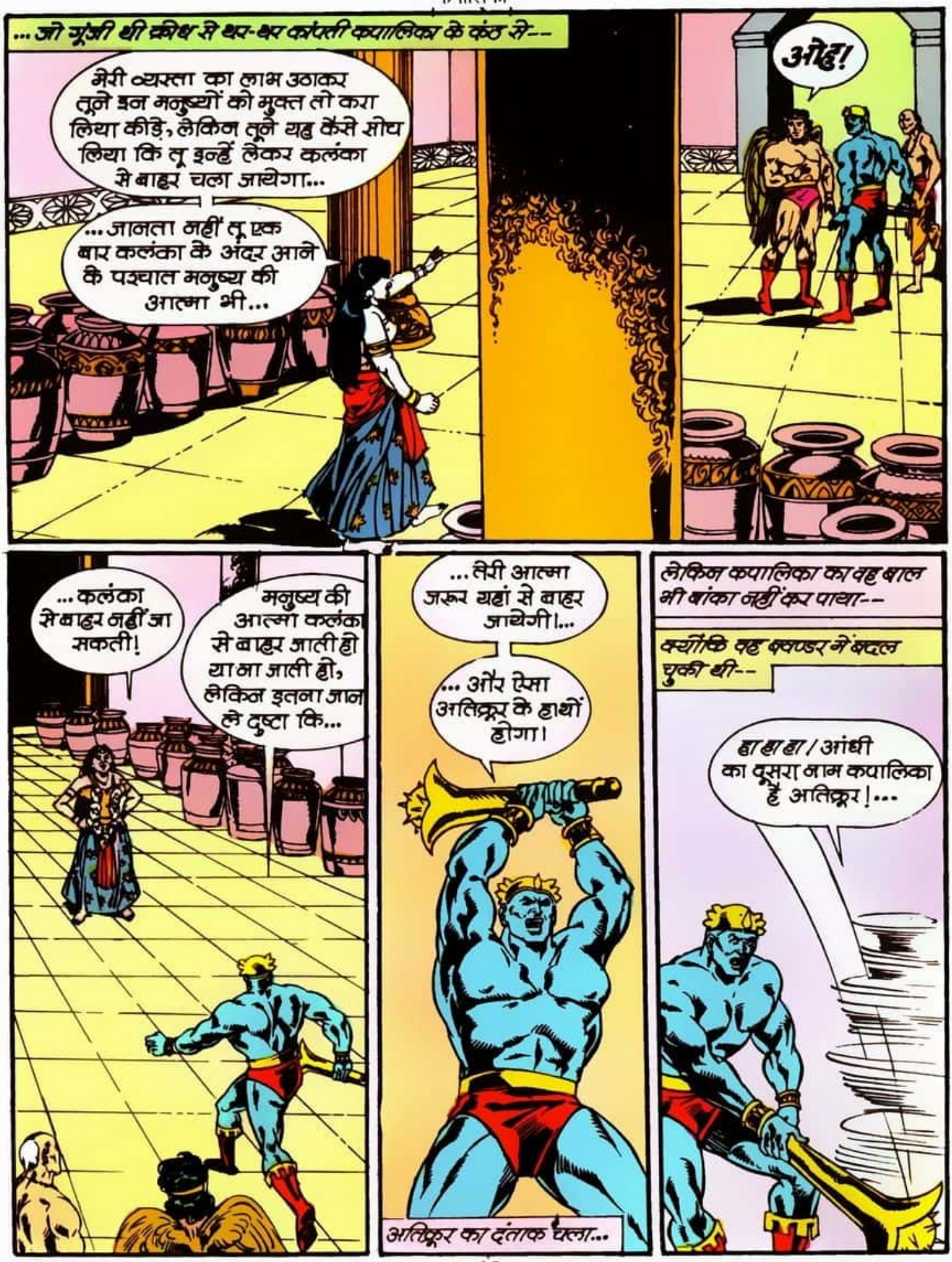
... जो गूंजी थी क्रोध से थर-थर कांपती कपालिका के कंठ से--
मेरी व्यस्तता का लाभ उठाकर तूने इन मनुष्यों को मुक्त तो करा लिया कीड़े, लेकिन तूने यह कैसे सोच लिया कि तू इन्हें लेकर कलंका से बाहर चला जायेगा...
...जानता नहीं तू एक बार कलंका के अंदर आने के पश्चात मनुष्य की आत्मा भी...
ओह!
...कलंका से बाहर नहीं जा सकती!
मनुष्य की आत्मा कलंका से बाहर जाती हो या मा जाती हो, लेकिन इतना जान ले दुष्टा कि...
...तेरी आत्मा जरूर यहां से बाहर जायेगी।...
... और ऐसा अतिक्रूर के हाथों होगा।
अतिक्रूर का दंताक चला...
लेकिन कपालिका का वह बाल भी बांका नहीं कर पाया--
क्योंकि वह कपड़र में बदल चुकी थी--
हा हा हा / आंधी का दूसरा नाम कपालिका है अतिक्रूर!...

... और इस आंधी को तू छू भी पाये इतनी शक्ति नहीं है तुझमें!
तू दंताक की शक्ति से अभी परिचित नहीं है दुष्टा...
... आंधी-तूफान के भी सीने चीरे हैं इसने!
भड़ाक
आह्ह
इस बार अतिक्रूर के हाथ से तूफान की तेजी से छूटे दंताक ने कपालिका को बचने का अवसर नहीं दिया--
दंताक की भयंकर चोट खाकर घायल नागिन की तरह फुंफकार उठी कपालिका--
शैतान की काली शक्तियों की स्वामिनी पर वार किया है तूने! अब तेरी खैर नहीं!
महामुण्ड प्रकट हो!
बिजली सी गरजी कपालिका--
महामुण्ड तुरन्त प्रकट हुआ--
विकराल...
...मारक...
...प्रचण्ड...
...कपालिका के आदेश पर आक्रमण के लिए तैयार!
आक्रमण!
महामुण्ड! इसके शरीर को रौंदकर धरा का बिछौना बना दे।

मेरे शरीर को रौंदने से पहले इसे अपनी ताकत की परीक्षा देनी पड़ेगी !
अतिक्रूर का शरीर कोई भूसे का ढेर नहीं जिसे धरा पर बिछाया जा सके !
भड़ाक
दंताक के भीषण प्रहारों ने मुण्ड के सभी दांतों को कंकड़ की तरह जमीन पर बिखरा दिया--
लेकिन अपने आपको मुण्ड के प्रहार से वह नहीं बचा पाया-
भड़ाक
लड़खड़ा कर एक तरफ गिरा अतिक्रूर...
...और जब तक वह संभल पाता उससे पहले ही हो गया अनर्थ-
अतिक्रूर!

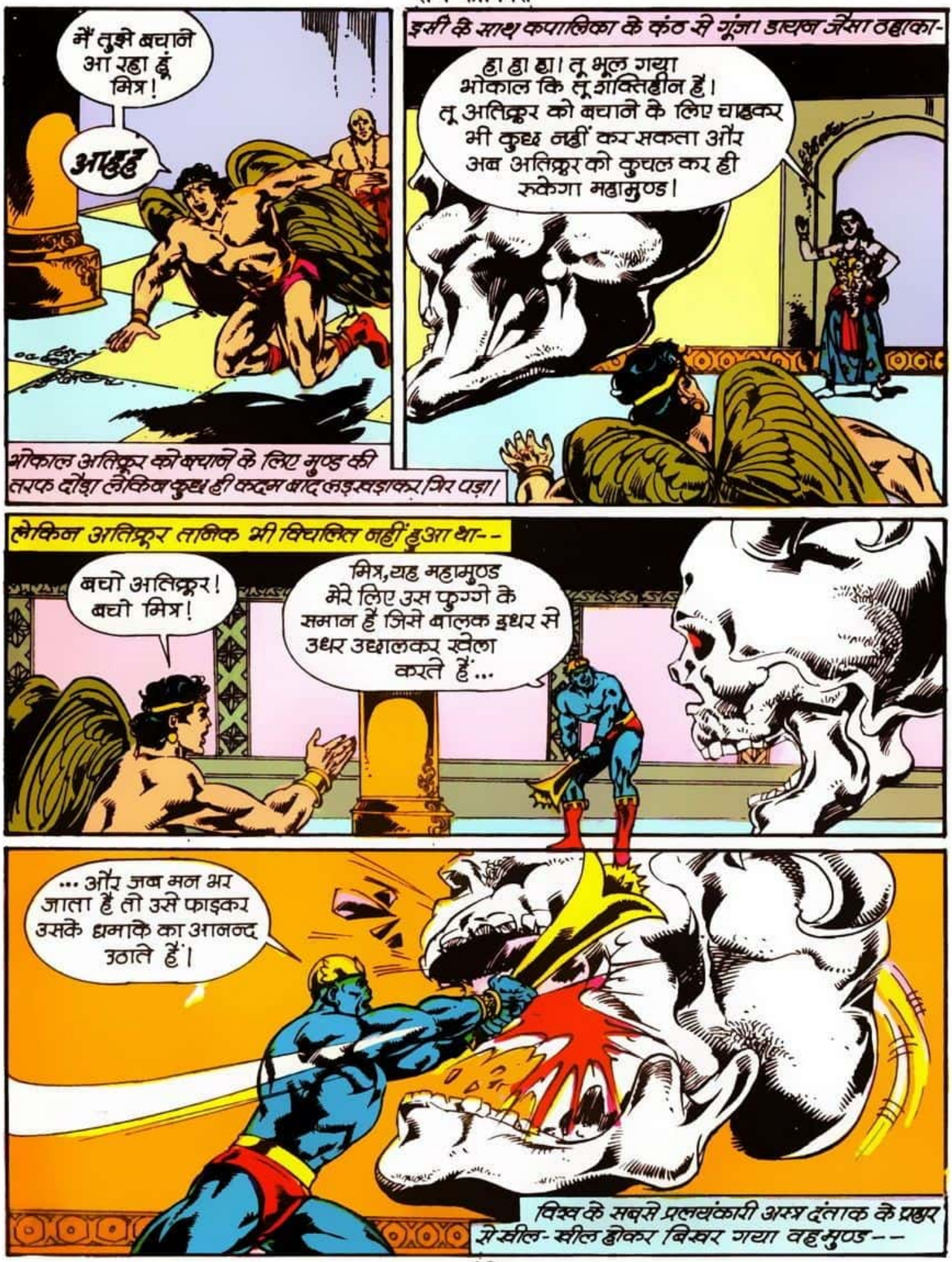
मैं तुझे बचाने आ रहा हूं मित्र!
आहह
भोकाल अतिक्रूर को बचाने के लिए मुण्ड की तरफ दौड़ा लेकिन कुछ ही कदम बाद लड़खड़ाकर गिर पड़ा।
इसी के साथ कपालिका के कंठ से गूंजा डायन जैसा ठहाका-
हा हा हा। तू भूल गया भोकाल कि तू शक्तिहीन है। तू अतिक्रूर को बचाने के लिए चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता और अब अतिक्रूर को कुचल कर ही रुकेगा महामुण्ड।
लेकिन अतिक्रूर तनिक भी विचलित नहीं हुआ था--
बचो अतिक्रूर! बचो मित्र!
मित्र, यह महामुण्ड मेरे लिए उस फुग्गे के समान है जिसे बालक इधर से उधर उछालकर खेला करते हैं...
... और जब मन भर जाता है तो उसे फाड़कर उसके धमाके का आनन्द उठाते हैं।
विश्व के सबसे प्रलयंकारी अस्त्र दंताक के प्रहार से खील-खील होकर बिखर गया वह मुण्ड--

इसी के साथ हवाइयाँ उड़ने लगीं कपालिका के चेहरे पर--
महामुण्ड को अतिक्रूर ने नष्ट कर दिया।
रक्त कुम्भों में अपना रक्त मिलाते-मिलाते मैं अत्याधिक दुर्बल हो गई हूं।
...ऐसी दशा में मैं अपनी जो भी शक्ति प्रयोग करूंगी अतिक्रूर उसे समाप्त कर डालेगा...
...इसलिये अब मेरे पास कपाल चलाने के सिवा कोई चारा नहीं है।
कपालिका ने चला दिया अपना सबसे शक्तिशाली अस्त्र कपाल--
...जिसकी शक्ति का अद्भुत चमत्कार तुरन्त ही सामने आया-
आहह। ऐसा क्यों लग रहा है मुझे कि मेरा लहू मेरे शरीर से बाहर की तरह खींच रहा है।
आहह!...
...कहीं ये मेरा भ्रम तो नहीं... आहह...
!!
??
अतिक्रूर के साथ जो घट रहा था वह उसका भ्रम नहीं था...
... बल्कि सच्चाई थी उसका सारा लहू वास्तव में उसके शरीर से बाहर खिंच रहा था-
कपाल की बदौलत जो तेजी से अतिक्रूर के लहू से भरता जा रहा था--

इस प्रक्रिया को रोकने के लिए कोई कुछ नहीं कर सकता था, ना वृद्ध रूपी हनुमान, ना महाबली भीकाल और न महान धनुर्धर धनुषा-
हा हा हा ! बस कुछ ही क्षणों में अतिक्रूर का सारा लहू कपाल में भरा होगा !
उन तीनों के साथ अब ब्रह्माण्ड का वह सबसे शक्तिशाली पुरुष भी समाप्त होने जा रहा था—

कि तभी अचानक कपाल एक तेज आवाज के साथ खील-खील होकर बिखर गया-
और ऐसा किया था उस काली किरण ने-
भड़ाक

जिसे छोड़ने वाली थी--
महान कलंकिनी! तुमने कपाल फोड़कर इसे बचाया।
हां। कपालिका ! क्योंकि क्रोध में वशीभूत होकर तू अपने ही लहू को खींच रही थी।
अपना लहू !

हां कपालिका ! इसकी रगों में भी एक राक्षसी का ही लहू दौड़ रहा है और जानती है वह राक्षसी कौन है?
कौन?
वही सरूपा जो जब तक कलंका नगरी में रही रात-दिन मेरी पूजा करती रही...

... वही सरूपा, जिसकी भक्ति देखकर मैंने जिसे अपनी पुत्री बना लिया था...
... यह अतिक्रूर उसी सरूपा का पुत्र है।

Ankur's UPload

...हट जाओ पीछे!
ओह!
तूने महान कलंकिनी का अपमान किया दुष्ट...

...मैं तुझे छोड़ूंगी नहीं।
ओह!
नहीं कपालिका! बालकों की नादानियां क्रोध की नहीं प्रेम की हकदार होती हैं।...
...मुझे विश्वास है प्रेम से मेरा यह प्रिय नाती भी समझ जायेगा।
!?!
अभी भी ममता उगल रही थी कलंकिनी की आवाज--

जबकि शोले बरस रहे थे अलिक्कर के स्वर में--
मुझे समझाने का प्रयत्न व्यर्थ है महान कलंकिनी। तुम्हारे लाख प्रयत्न के पश्चात् भी मैं इस पाप की नगरी में एक क्षण के लिए भी नहीं ठहर सकता...
...मैं अपने मित्रों को लेकर यहां से जा रहा हूं।...

...जिसमें साहस हो, जिसका सीना फौलाद से भरा हो वह आकर रोक ले मेरा रास्ता!
वह उन पुण्य शक्तियों को लेकर जा रहा है महान कलंकिनी! उनके जाने से हमारे रुधिर यज्ञ में विघ्न पड़ेगा! रोको उसे!

नहीं कपालिका! अपनी मां की तरह वह भी बहुत हठी है जैसे वह नहीं रुकी थी वैसे ही यह भी नहीं रुकेगा, इसलिए जाने दो उसे।
नहीं! मैं उसे जाने देकर रुधिर यज्ञ में विघ्न नहीं पड़ने दूंगी...

... मैं रोकूंगी उसे।
आहहह!
चटाक
मैंने कहा ना, नहीं रुकेगा वह...

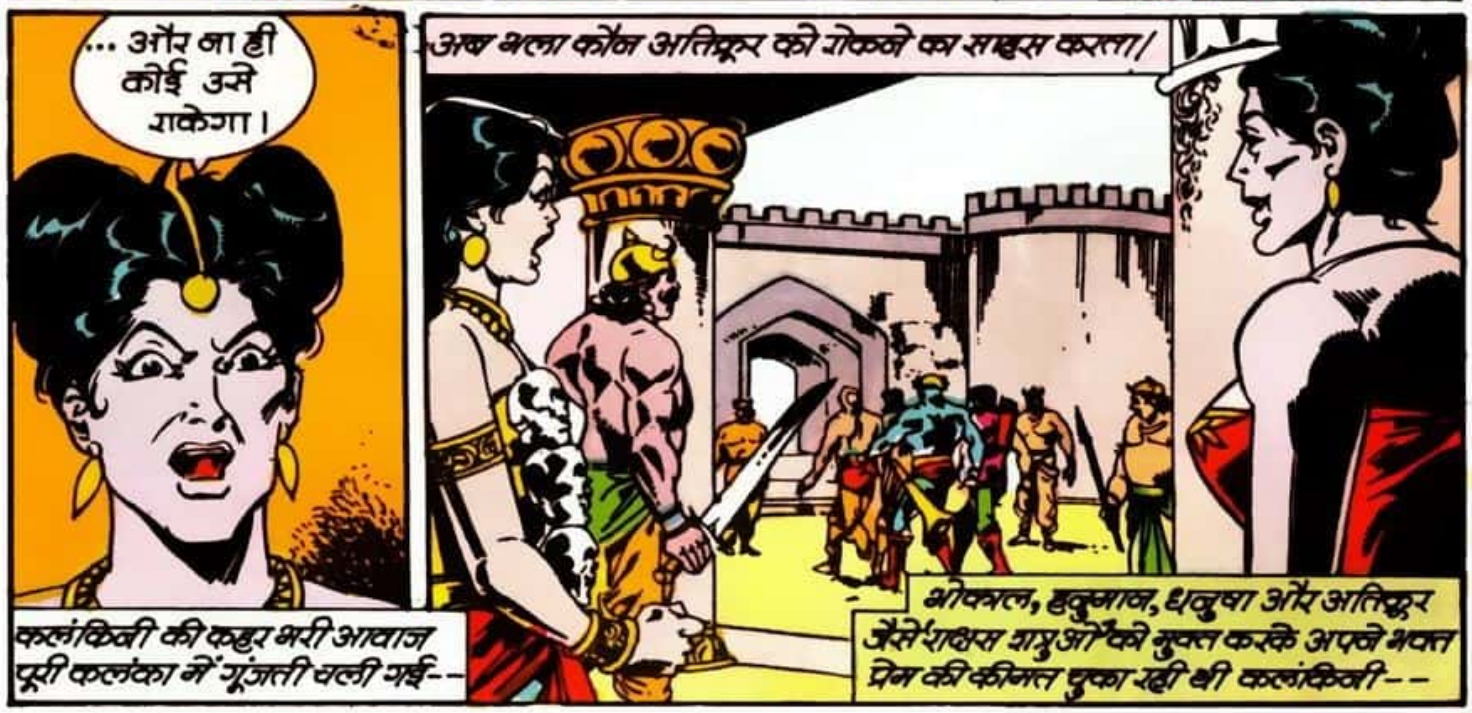
... और ना ही कोई उसे रोकेगा।
अब भला कौन अतिक्रूर को रोकने का साहस करता!
कलंकिनी की कहर भरी आवाज पूरी कलंका में गूंजती चली गई--
श्रीकवल, हनुमान, धनुषा और अतिक्रूर जैसे राक्षस शत्रुओं को मुक्त करके अपने भक्त प्रेम की कीमत चुका रही थी कलंकिनी--

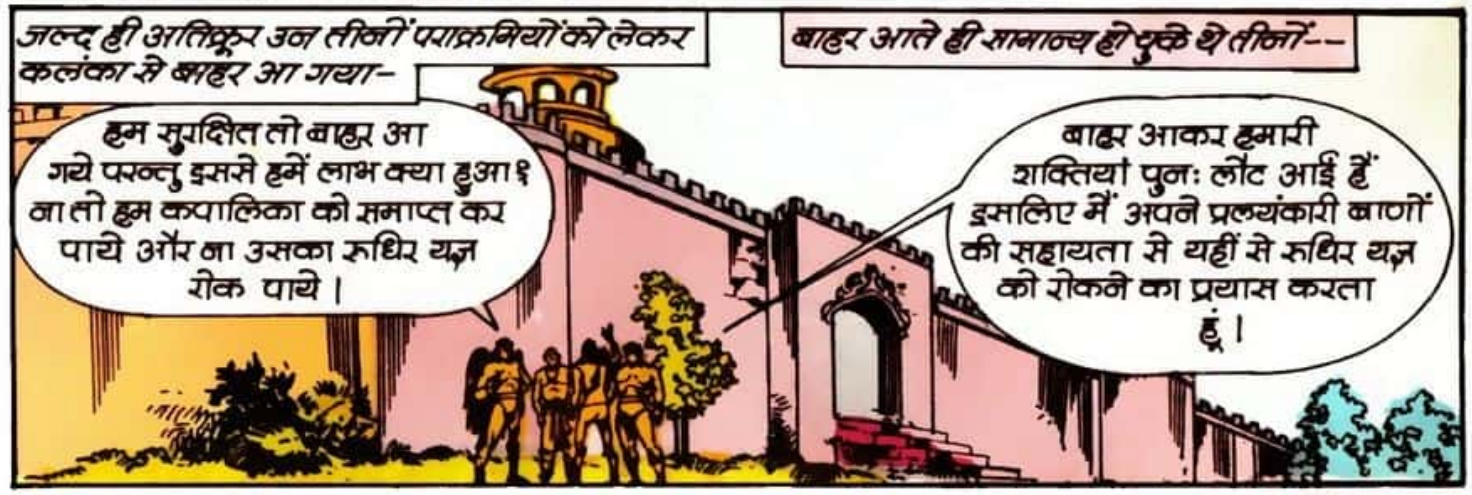
जल्द ही अतिक्रूर उन तीनों पराक्रमियों को लेकर कलंका से बाहर आ गया-
बाहर आते ही सामान्य हो चुके थे तीनों--
हम सुरक्षित तो बाहर आ गये परन्तु इससे हमें लाभ क्या हुआ? ना तो हम कपालिका को समाप्त कर पाये और ना उसका रुधिर यज्ञ रोक पाये।
बाहर आकर हमारी शक्तियां पुनः लौट आई हैं इसलिए मैं अपने प्रलयंकारी बाणों की सहायता से यहीं से रुधिर यज्ञ को रोकने का प्रयास करता हूं।

कलंका हर शक्ति छीन लेती है यह जानते हुए भी ऐसी बात करना मूर्खता है महान धनुर्धर!
क्या इसका कोई उपाय नहीं है वृद्धवर?

एक उपाय है। अगर कलंकिनी कलंका से बाहर आ जाये तो फिर कलंका में घुसकर भी तुम सब अपनी-अपनी शक्तियों का प्रयोग कर सकते हो।
ओह! परन्तु कलंकिनी कलंका से बाहर आयेगी कैसे? उसे बाहर कौन ला सकता है?
अतिक्रूर! अतिक्रूर कलंकिनी को कलंका से बाहर ला सकता है।
अतिक्रूर दृढ़ कदमों से एक तरफ चल पड़ा।
अतिक्रूर ने झुक कर एक कांटा उठाया और उसे अपनी उंगली में घोंप दिया।
कांटा बाहर खींचते ही ही रक्त की धार ऐसे बाहर निकली जैसे धरा को फाड़कर पानी का चश्मा बाहर निकला हो।
जैसे गोमुख से गंगा द्रुत गति से निकलती है उसी तीव्र गति से वह रक्त प्रवाह कलंका की चार दीवारी लांघता हुआ-
कलंका में उपस्थित कलंकिनी की प्रतिमा को नहलाता चला गया--
प्रकट हो महान कलंकिनी प्रकट हो।

एक क्षण बाद ही--
धड़ाम
धमाके से मूर्ति के परखच्चे उड़ाकर प्रकट हुई वह कलंका की स्वामिनी...
...और अगले ही पल वह कलंका के बाहर अतिक्रूर के सामने खड़ी थी--
आखिर तुम्हें मेरी सहायता की आवश्यकता पड़ ही गई पुत्र !
नहीं ! मुझे तुम्हारी सहायता नहीं, तुम्हारा वरदान चाहिए!
वह वरदान जिसका वचन तुमने मेरी मां और अपनी धर्म पुत्री को दिया था।
हां! सरूपा की भक्ति से प्रसन्न होकर मैंने एक बार उसे कोई वर मांगने के लिए कहा था लेकिन उसने कुछ नहीं मांगा...


...सचमुच वह वरदान मुझ पर सरूपा का कर्ज है पुत्र अतिक्रूर और तुम्हें इसका पूरा अधिकार है कि तुम वह वरदान मांग कर हमें उस दायित्व से मुक्त करो!
धन्यवाद महान कलंकिनी परन्तु मुझे भय है कि तुम वरदान देने से इंकार ना कर दो।

ऐसा नहीं होगा पुत्र! कलंका को छोड़कर तुम कुछ भी मांगो, तुम्हें अवश्य मिलेगा !
ऐसा है तो मैं तुमसे कलंका के बाहर यहां इस युद्ध भूमि में युद्ध लड़ने का वरदान मांगता हूं।

अतिक्रूर के शब्दों ने कलंकिनी पर मानों बिजली गिरा दी-
उफ! ये तुमने क्या मांग लिया पुत्र!
भला मैं अपने जिगर के टुकड़े से युद्ध कैसे लड़ सकती हूं। कुछ और मांगो पुत्र!
मुझे मात्र यही वरदान चाहिए महान कलंकिनी! ना देना चाहो तो मैं तुम्हें इसके लिए विवश नहीं करूंगा।

अपने वचन के हाथों विवश होकर एक मां अपने ही बेटे से युद्ध लड़ने को तैयार है पुत्र !
कलंकिनी के हाथों में हथियार, हृदय में ममता और आंखों में आंसू मौजूद थे...
...जबकि पास ही मौजूद वृद्ध की आंखों में मौजूद थी सूर्य-सी चमक--
हमारी योजनानुसार कलंकिनी अतिक्रूर से युद्ध लड़ने कलंका से बाहर आ चुकी है।...
जाओ कलंका में प्रवेश करो महाबली...
इधर राक्षसों पर मौत बरसाने के लिए भोकाल और धनुषा ने कलंका में प्रवेश किया--
इधर शुरू हुआ कलंकिनी और अतिक्रूर का युद्ध--
वाह पुत्र! वाह! तुम्हारे बारे में जैसा सुना था वैसा ही पाया तुम वास्तव में ही महान योद्धा हो...
टनाक
...जिसके हाथों में है दंताक जैसा प्रलयंकारी अस्त्र !
अतिक्रूर और कलंकिनी एक दूसरे पर वार कर रहे थे--
जबकि भोकाल और धनुषा--
वो रही कपालिका! अपने रुधिर यज्ञ को समापन करने के प्रयास में जुटी है।
वृद्धवर के अनुसार इन ग्यारह लाख कुम्भों को एक ही बाण में फोड़ना आवश्यक है।...

Ankur's UPload

...और ऐसा होगा महाशैतान के इस अमोक दण्ड की बदौलत !
कपालिका ने उछाल फेंकी वह अमोक शक्ति--
दूसरे ही क्षण जिसे प्रहारा की मदद से धूल में मिलाया भोकाल ने--
तेरा अमोक दण्ड प्रहारा एक क्षण में काट देगा।
और मेरे बाणों की यह आंधी तुझे उड़ा ले जाएगी दुष्टा !
कपालिका की आंधियां सलाम करती हैं ! कपालिका क्षीण होकर भी इतनी शक्तिशाली है कि तुम्हें खाक में मिला दे।
बोलते-बोलते ना जाने क्या किया कपालिका ने...
...कि उसका सिर भयंकर रूप धारण करने लगा--
तुम दोनों को समाप्त करने के लिए अपनी एक असाधारण शक्ति का उपयोग कर रही हूं मैं। इस शक्ति की वजह से मेरे रक्त में अत्यंत शक्तिशाली चुम्बकीय प्रभाव पैदा हो जाता है और वह मेरे शत्रु के जिस्म में मौजूद रक्त को मेरे मुंह की तरफ खींचता है...

... शत्रु की एक-एक रक्त धमनियों को फाड़कर। हा हा हा!
अरहह
आहहह
भोकाल और धनुषा के कुछ समझ पाने से पहले ही उनके शरीर की नसें फूलने लगीं--
लहू को उनका शरीर कैद लगने लगा जिससे आजाद होने के लिए वह उनके शरीरों की दीवार तोड़ने की प्रबल चेष्टा करने लगा--
ज्यों-ज्यों चुम्बकिय दबाव बढ़ रहा था त्यों-त्यों उन महाकालियों का लहू ज्यादा बगावत कर रहा था-
क्या हाथ, क्या पैर, क्या कंधे, क्या छाती, क्या चेहरा सब कुछ रक्त दबाव की अधिकता से फट पड़ने को उतारू हो रहा था।
ठीक उसी समय एक और पराक्रमी अपनी मौत से पूरे जी जान से जूझ रहा था--
और वह पराक्रमी था अतिक्रूर...
...जो कलंकिनी के हर वार का प्रत्युत्तर अपने भीषण प्रहारों से दे रहा था--
और उसके वही तेवर बता रहे थे कि वह मौत के सामने काफी देर तक टिक सकता था--

वहीं भोकाल और धनुषा अब मात्र कुछ ही क्षण और टिके रहने वाले थे--
मृत्यु हम दोनों से ज्यादा दूर नहीं। हमारे शरीरों से लहू छूटा नहीं कि हम निष्प्राण होकर गिरे नहीं।
लेकिन अपने प्राण बचाने का एक प्रयास तो मुझे करना ही होगा...
कोई भी क्षण उनके जीवन को मृत्यु की गोद में पहुंचा सकता था--
और यह बात अच्छी तरह समझ गया था भोकाल--
...और इसके लिए मुझे श्रीराम का स्मरण करके उनका अद्भुत धनुष प्राप्त करना होगा...
फिर यह नलिका बाण कपालिका की लहू की प्यास अवश्य पूरी करेगा।
श्रीराम का स्मरण कर भोकाल ने यह बाण प्रत्यंचा खींचकर छोड़ दिया--
बाण जा खड़ा हुआ ग्यारह लाख रुधिरकुण्डों से बड़े लहू के तालाब में--
और फिर उस नलिका बाण जो कि अंदर से नलिका की तरह खोखला था कि खिंचाव शक्ति से सारा लहू उस बाण के जरिए...
...चुम्बकिए प्रभाव से रक्त खींचने को आतुर राक्षसी के खुले मुंह में प्रवेश करता चला गया--
महाबली के लहू की प्यासी यकायक संभल जा पाई...

दस लाख घड़े खून तीव्र गति से उसके खुले मुंह से उसके उदर में प्रविष्ट होता चला गया--
राक्षसी का उदर बड़ा और बड़ा होता चला गया।
...किन्तु इतना लहू एक बार में आज तक किसी राक्षसी ने नहीं पिया था--
कपालिका का तेजी से बढ़ता पेट कब तक यह कमाल दिखा पाता--
एक भयंकर विस्फोट से खण्ड-खण्ड होकर कलंका की धरा पर बिखर गया उसका शरीर।
बादल फटने से हुई भीषण बरसात की तरह वह लहू बरसा कलंका नगरी पर।
जिसके छींटे गिरे कलंकिनी के शरीर पर भी।
ओह, नहीं ये रक्त! इसका मतलब कपालिका समाप्त हो गई।
कपालिका के साथ रुधिर यज्ञ भी समाप्त हो गया है महान कलंकिनी...
...और इसी के साथ समाप्त होता है हमारा यह युद्ध!
अतिक्रूर ने दंताक एक तरफ फेंक दिया-

इसी के साथ एक दर्द भरी मुस्कान खेल गई कलंकिनी के अधरों पर-
मैं पहले ही जानती थी ऐसा होगा पुत्र ! मैं पहले ही समझ गई थी कि तुम मुझे युद्ध लड़ने हेतु कलंका से बाहर इसलिए लाना चाहते थे ताकि वे मनुष्य मिलकर कपालिका को मारकर रुधिर यज्ञ भंग कर दें...
... लेकिन सब कुछ जानते बूझते भी मुझे अपना वचन निभाने कलंका से बाहर आना ही पड़ा।
अब तुम्हारे उद्देश्य के पूरे होने के साथ अपनी धर्मपुत्री को दिया मेरा वरदान भी पूरा हो गया है। मेरे वचन से मुक्ति मिल गई है मुझे
... इसलिए मैं तुम्हें चेतावनी देने के साथ-साथ दो पहर का समय देती हूं पुत्र आतिक्रूर ! अपने मनुष्य साथियों को लेकर कलंका से दूर निकल जाओ ...
... नहीं तो मेरे कहर पर लगा बांध टूट जायेगा और तुम्हारे साथियों के साथ-साथ तुम्हें भी नेस्तनाबूद कर देगा...
... क्योंकि अब मैं भूल चुकी हूं कि तुम मेरी धर्म-पुत्री के पुत्र हो।
क्रोध से गरजती कलंकिनी अदृश्य होती चली गई-
कपालिका पर जीत हासिल करके खुशी से नाचते-कूदते चारों अपने भील साथियों को वह खुशखबरी सुनाने के लिए बढ़ चले--
समाप्त